जीवन की ओर कदम उठाना

एल्मर मरडोक़ द्वारा

परमेश्वर एक अद्भुत परमेश्वर है परमेश्वर आप से प्रेम करता है और आपका ध्यान प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है।

शायद ये कुछ चीज़ें इसमें बाधक हैं...

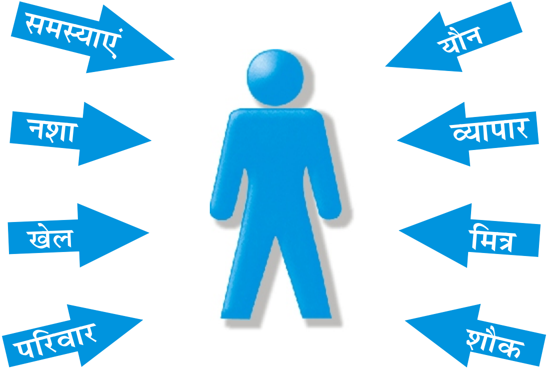

आपकी उलझनें आपको परमेश्वर के विषय को विचार करने से दूर रख सकती हैं।
तभी, जब आप इस पुस्तिका का अध्ययन करते हैं, तो परमेश्वर आप से कुछ कह सकता है।

संभवतः आप परमेश्वर के बारे में पहले से कुछ जानते हों, परन्तु यहां तीन प्रमुख सत्य दिए गए हैं जिन पर अभी आपको मनन करना चाहिए।

...वह सर्वज्ञानी है और जानता है कि आपके जीवन के लिए क्या भला है।
...वह पवित्र है, पाप का समर्थन नहीं कर सकता और इसका न्याय करेगा।
...वह करुणामयी है इसलिए वह न्याय को रोक सकता और आपको क्षमा कर सकता है क्योंकि मसीह ने क्रूस पर आपके लिए अपनी जान दी। *"तेरे समान ऐसा परमेश्वर कहां है जो अधर्म को क्षमा करे --"* मीका 7:18

परमेश्वर तक पहुंचने का एकमात्र मार्ग यीशु मसीह है, क्योंकि उसने कहा, *"... मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।"* यूहन्ना 14:6

क्या आपको कभी हैरानी हुई है---

"जीने के लिए सर्वोच्च उद्देश्य क्या है?"

कुछ का कहना है–मेरे परिवार का आनन्द, प्रसन्न होना, एक अच्छा जीवन व्यतीत करना, परिपूर्ण रहना। ये सभी अच्छे हैं, परन्तु बाइबल हमें बताती है कि सर्वोच्च उद्देश्य यीशु मसीह द्वारा अनुभव प्राप्त कर परमेश्वर को जानना है। इस बारे में विचार करें! आप परमेश्वर को एक मित्र के समान जान सकते हैं।

"और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है जानें।" यूहन्ना 17:3

यह अद्भुत परमेश्वर करना चाहता है:

- आपको आपके सभी पापों से क्षमा प्रदान करना
  - अब आपके जीवन में एक नया अर्थ देना
    - आपकी मृत्यु पश्चात् आपको स्वर्ग ले जाना

यह सभी आपका है जब आप स्वयं को प्रभु यीशु मसीह के प्रति समर्पित कर देते हैं, जो परमेश्वर का इकलौता पुत्र है।

यदि आप प्रेम और करुणा के इस प्रस्ताव को अस्वीकृत करते हैं, तो आप स्वयं को परमेश्वर पर और उसके न्याय के आधीन लाते हैं। (यूहन्ना 3:36) आप स्वयं का अंतिम अधिकारी बना रहे हैं।

इसलिए, सब से महत्वपूर्ण प्रश्न जिसका आप सामना करेंगे।

कौन आपके जीवन को मार्ग दर्शन देता है?

आप या यीशु? अगले कुछ पृष्ठ यह जानने में आपकी सहायता करेंगे।

प्रत्येक व्यक्ति इन 5 चरणों में से एक में है।

आपका व्यवहार परमेश्वर से आपकी दूरी का निर्धारण करता है। प्रत्येक "चरण" परमेश्वर के प्रति एक हार्दिक व्यवहार का वर्णन करता है और यह आपकी दूरी को निर्धारित करता है–निकट या दूर––उससे (परमेश्वर से)। यीशु ने इस विषय में सिखाया जब उसने एक व्यक्ति को सत्य की खोज करने को कहा, *"तू परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं।"* मरकुस 12:34

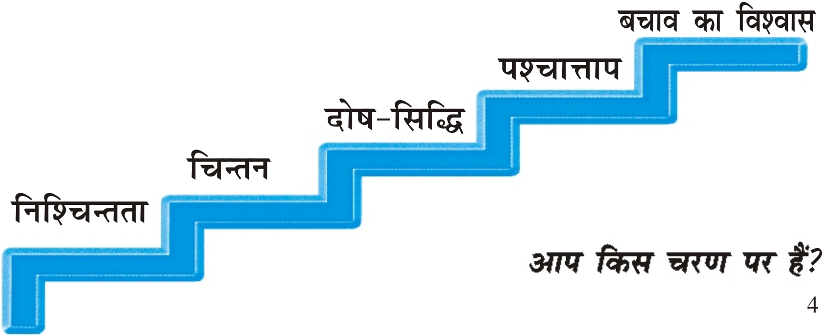

आप किस चरण पर हैं?

निश्चिन्तता

आप उद्धार व यीशु के बारे में बहुत कुछ जान सकते हैं या फिर बहुत कम। महत्वपूर्ण सूत्र की आप वास्तव में चिन्ता नहीं करते हैं।

एक निश्चिन्त रवैया आपको परमेश्वर को जानने से दूर रखेगा, परन्तु यह परमेश्वर को आपके बारे में चिन्ता करने से अलग नहीं रखता है। *"क्योंकि परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।"* रोमियों 5:8

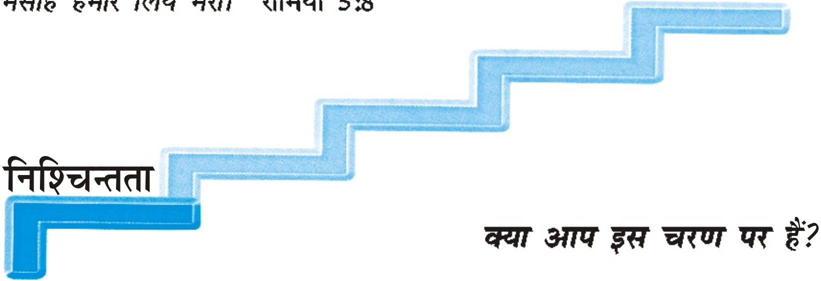

चिन्तन

आप अपनी आन्तरिक और आत्मिक आवश्यकताओं के प्रति जागरूक हैं और उनसे जवाब प्राप्त करना चाहेंगे।

शायद एक मृत्यु, तलाक, नौकरी को खोना, बीमारी, या एक मित्र का प्रभाव आपको खालीपन तथा आत्मिक आवश्यकता का बोध कराता है। यह खालीपन यीशु मसीह के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध की कमी के कारण है। प्रभु कहता है, *"तुम मुझे ढूंढोगे और पाओगे भी; क्योंकि तुम अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास आओगे।"* यिर्मयाह 29:13

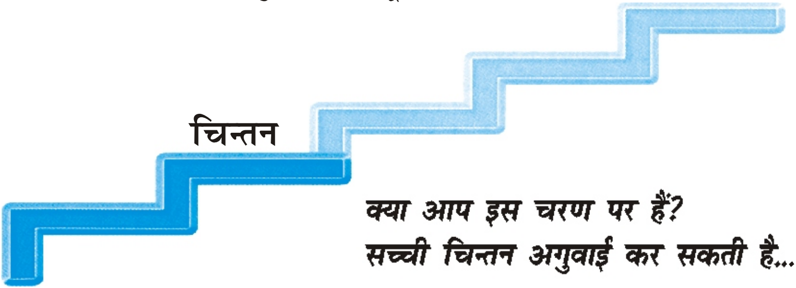

दोष-सिद्धि

आप में एक मज़बूत आत्मिक बेचैनी और दोषभाव है जिसे पवित्र आत्मा आप पर आपके पाप और खालीपन को प्रगट करने के द्वारा व्यक्त करता है।

क्या आप "अच्छा बनने" या "जितना श्रेष्ठ आप कर सकते हैं उसे करते हुए" स्वर्ग जाने की आशा करते हैं? आपको स्वयं से यह प्रश्न पूछने हैं, "क्या मैं पर्याप्त रूप से भला हूं? क्या मैं परमेश्वर की आज्ञाओं का — 100 प्रतिशत—विचार, शब्द और कार्य में पालन करता हूं?" यदि ऐसा है, तो आप अपने भले जीवन के द्वारा स्वर्ग में जा सकते हैं। मत्ती 19:17-19 कदापि

"*...व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान होती है।*" रोमियों 3:20

यह जानने को कि आप कितने भले हैं, परमेश्वर की भलाई की परीक्षा दें— दस आज्ञाएं।

तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना।
तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना।
तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना।
तू विश्राम दिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना।
तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना।
तू खून न करना।
तू व्यभिचार न करना
तू चोरी न करना।
तू किसी के विरूद्ध झूठी साक्षी न देना।
तू किसी के घर का लालच न करना। **निर्गमन 20:3-17**
(पवित्र बाइबल)

आपने कितने अंक प्राप्त किये? सफलता 100% पर है। परमेश्वर अनुपात पर दरजा नहीं देता। याकूब 2:10 कहता है कि यदि आप एक आज्ञा का पालन करने में चुक जाते हैं, तो आप असफल हो जाते हैं। व्यवस्था एक गुब्बारे के समान है। एक छिद्र पूरे का नाश कर देता है।

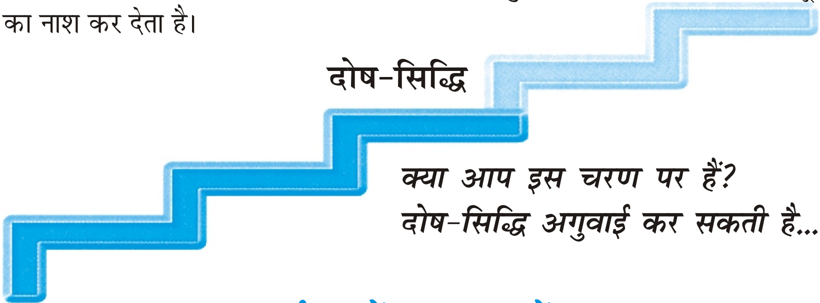

दोष-सिद्धि

क्या आप इस चरण पर हैं?
दोष-सिद्धि अगुवाई कर सकती है...

तत्पश्चात्, इन महत्वपूर्ण प्रश्नों पर ध्यान दें:

1. क्या आप ने परमेश्वर की किसी भी व्यवस्था को तोड़ने के द्वारा पाप किया है? ☐ हां ☐ नहीं
2. क्या आप के पाप आपको कभी परेशान करते हैं? ☐ हां ☐ नहीं
3. कितना? ☐ कम? ☐ अधिक? ☐ उनके बारे में कुछ करने के लिए पर्याप्त?

पश्चात्ताप

आपका मन और हृदय बदला हुआ है और सभी ज्ञात पापों को अस्वीकृत करने व छोड़ने का आपने चुनाव किया है और स्वतन्त्रतापूर्वक परमेश्वर के साथ अपने जीवन को चला रहे हैं।

पश्चात्ताप... अपने जीवन के सिंहासन से उतरने का कार्य है ताकि यीशु मसीह अपना उचित स्थान वहां ले सके।

पश्चात्ताप... आत्मिक यू-टर्न (घुमाव) है, जो आपके विश्वास करने से पूर्व आवश्यक है।

पश्चात्ताप... केवल अपने पर खेद प्रगट करना ही नहीं है। पश्चात्ताप के साथ दुख भी होता है, परन्तु पश्चात्ताप के बिना भी आप दुखी हो सकते हैं। कई लोग अपने पाप के परिणामों पर खेद प्रगट करते हैं, परन्तु स्वयं पाप ऐसा नहीं करता। *"परमेश्वर-भक्ति का शोक ऐसा पश्चात्ताप उत्पन्न करता है, जिसका परिणाम उद्धार है और फिर उस से पछताना नहीं पड़ता: परन्तु संसारी शोक मृत्यु उत्पन्न करता है।"* 2 कुरिन्थियों 7:10

पश्चात्ताप... केवल एक पाप पूर्ण कार्य को छोड़ना नहीं है। कुछ लोग निश्चित पापों से अलग रहते हैं और व्यक्तिगत कारणों से उसमें सुधार करते हैं (स्वास्थ्य, प्रतिष्ठा, परिवार, व्यापार, इत्यादि), इसलिए नहीं कि उनके पाप परमेश्वर को अप्रसन्न करते हैं।

पश्चात्ताप... का वर्णन नये नियम में 55 से अधिक बार किया गया है।

यीशु ने स्वयं कहा, *"परन्तु यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नाश होगे।"* लूका 13:3

तब पश्चात्ताप इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

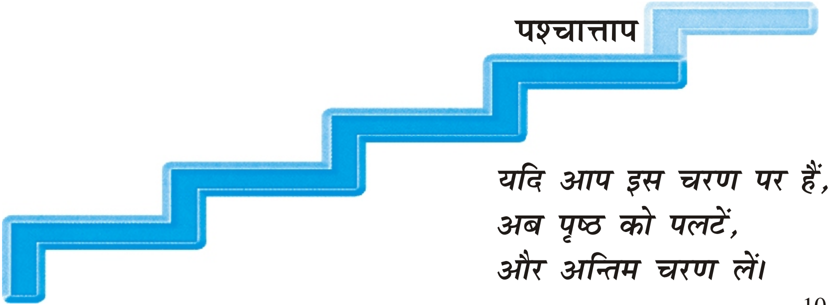

यदि आप इस चरण पर हैं,
अब पृष्ठ को पलटें,
और अन्तिम चरण लें।

प्रभु यीशु में बचाव का विश्वास

आप सभी जो कुछ हैं उसके पूर्ण समर्पण के लिए आपको तैयार किया गया है और आप सभी पर प्रभु यीशु मसीह का शासन है।

आपके हृदय की सरकार का आत्म-शासन से प्रभु यीशु मसीह में परिवर्तन हो गया है। क्योंकि मसीह परमेश्वर है, जो क्रूस पर मारा गया और आपके लिए मृतकों में से जी उठा; वह आपकी नौकरी, परिवार, वित्त, जीविका और स्वयं आपके जीवन से भी बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। मत्ती 10: 37-39, लूका 9:57-62, 1 कुरिन्थियों 15:3,4

लूका 14:26 में, यीशु कहता है कि यदि कोई व्यक्ति उसका शिष्य होना चाहे, तो प्रभु को अपने पिता और माता, अपनी पत्नी और बच्चों, अपने भाई और बहनों से प्रथम स्थान पर रखना होगा—हां, स्वयं अपने जीवन से भी— नहीं तो वह उसका शिष्य नहीं हो सकता।

जब आप इस तरह से समर्पण करते और पूर्ण रूप से उस पर भरोसा रखते हैं, तो परमेश्वर अपनी आत्मा को आप में डालेगा और आपका उसके परिवार में जन्म होगा। परमेश्वर अब आपका प्रेमी पिता बन जाता है और वह आप में कोई भी परिवर्तन कर सकता है जो वह करना चाहता है— कहीं भी, किसी भी समय।

प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू---उद्धार पाएगा।" प्रेरितों के काम 16:31

"सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें।" रोमियों 5:1

"और उसके क्रूस पर बहे हुए लहू के द्वारा मेल-मिलाप करके..."
कुलुस्सियों 1:20

मन परिवर्तन होने पर यीशु मसीह आपके जीवन का प्रभु हो जाता है। वह आप में आपके आत्मा के द्वारा रहता है और आपकी आत्मा और मसीही जीवन का स्रोत और समर्थ करनेवाला है।

बचाव का विश्वास

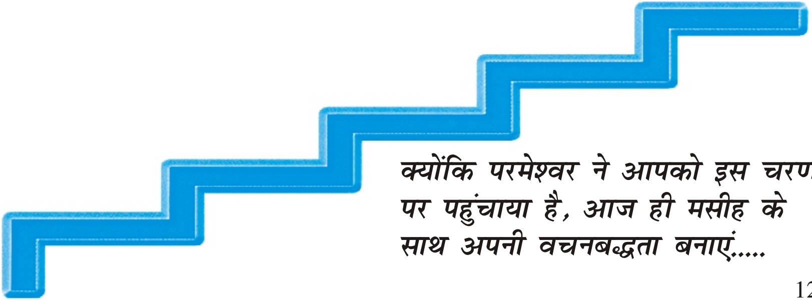

क्योंकि परमेश्वर ने आपको इस चरण पर पहुंचाया है, आज ही मसीह के साथ अपनी वचनबद्धता बनाएं.....

अपने स्वयं के शब्दों में परमेश्वर से बात करें...

अपने पापों को अंगीकार करें। नाम लेकर उन्हें पुकारें–घमण्ड, यौन पाप, झूठ बोलना, अक्षमाशीलता, लालच, छल, इत्यादि।

परमेश्वर को बताएं कि आप यीशु मसीह में विश्वास कर रहे हैं— सभी ज्ञात पापों और अपने पापों की जड़ को छोड़ने के लिए तैयार होना जो कि स्वार्थ है।

परमेश्वर को बताएं कि आप यीशु मसीह में विश्वास कर रहें हैं– जिसे उसने (परमेश्वर ने) मृतकों में से जिलाया और उसे अपने जीवन में अपने प्रभु व उद्धारकर्त्ता के रूप में ग्रहण कर रहे हैं।

वह अपने वचन को पूरा करेगा, आपको क्षमा करेगा और आपको नया बनाते हुए आपके जीवन में आएगा।

आप इस वचनबद्धता को गहन भावनाओं के साथ या उसके बिना भी बना सकते हैं। आपकी प्रतिक्रिया को स्वभाव, पृष्ठभूमि, और परमेश्वर की आप तक विशिष्ट पहुंच के द्वारा निर्धारित किया जाता है। आप जानते हैं कि आप ने अपनी इच्छा को परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए समर्पित कर दिया है और यह आवश्यक है। भावनाएं चली जाएंगी, परन्तु आपके हृदय का चुनाव सदा एक समान ही रहेगा।

उसकी संतान बनने और आप में उसका नया जीवन होने के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें। आप अभी प्रार्थना कर सकते हैं।

चार कारण जिनसे आप जान सकते हैं कि आपने उद्धार प्राप्त किया है:

1 आपने पश्चात्ताप और विश्वास करने को परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किया, और वह अपने वचन को पूरा करने में विश्वासयोग्य है। *"मैं ने तुम्हें जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिये लिखा है; कि तुम जानो, कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।"* 1 यूहन्ना 5:13

2 आपको क्रूस पर मसीह के बहाए गए लहू पर भरोसा है। *"हम को उस में उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है।"* इफिसियों 1:7

3 आप ने अपने जीवन को चलानेवाले सभी दावों को छोड़ दिया है और स्वयं को यीशु मसीह को दे दिया है, जो पुनर्जीवित प्रभु और सर्वोच्च है। *"सो जैसे तुम ने मसीह यीशु को प्रभु करके ग्रहण कर लिया है, वैसे ही उसी में चलते रहो।"* कुलुस्सियों 2:6

4 परमेश्वर ने अपने पवित्र आत्मा को आपके भीतर डाला है–आपकी आत्मा में, और आपको आश्वासन देता है कि आप उसके हैं। *"आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं।"* रोमियों 8:16

यीशु मसीह में नया जीवन इन आरम्भिक परिवर्तनों को उत्पन्न करता है...

1. **बाइबल को जानने की एक इच्छा** *"नये जन्मे हुए बच्चों की नाईं निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ।"* 1 पतरस 2:2
2. **यीशु मसीह का आज्ञा पालन करने की एक इच्छा** *"यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।"* यूहन्ना 14:15
3. **पाप का दुख** हम पाप में अधिक समय तक आनन्दित नहीं रह सकते हैं। *"प्रभु अपनों को पहचानता है; और 'जो कोई प्रभु का नाम लेता है, वह अधर्म से बचा रहे।"* 2 तीमुथियुस 2:19
4. **खोए हुओं से सम्बद्ध**-जिन्होंने अभी तक पश्चात्ताप नहीं किया है और परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते हैं *"(वह) तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि कोई नाश हो; वरन यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले।"* 2 पतरस 3:9

Step Up To Life Ministries 111 East Douglas Street, P.O. Box 730 Elkhorn, NE 68022 U.S.A.	For teaching/study and children's material, video or various language tract versions, contact us at (402) 933-4095 www.stepuptolife.com • sutlmail@aol.com

अतिरिक्त सहायता के लिए सम्पर्क करें:

Logos Faith Foundation Post Box 23, Ambala Cantt - 133 001 Haryana, North India.	**लोगेस फेथ फाऊडेंशन** पोस्ट बॉक्स-23, अम्बाला केंट-133 001 हरियाणा, नार्थ इंडिया